

ଶ୍ରୀକୃତ୍ସ କାବ୍ୟଗୁଡ଼ୀ

- ଆନନ୍ଦବିନ୍ଦ 'ଶ୍ରୀକୃତ୍ସ' ଅଳ୍ପରୁ 'କୃତ୍ସ' ଅନ୍ତରାର ଲଖନ।
- ଅତିନର୍ମୁଣ୍ଡ 'ଶ୍ରୀକୃତ୍ସକେରୁ' 'ଲୋଜେ' ନାମ ରୀକା ୧୩]
ଅନ୍ତର୍ବାହିନୀରେ
ଅନ୍ତିମାତ୍ରୀ ।
- ଅନ୍ତର୍ବାହିନୀରେ
ଅନ୍ତିମାତ୍ରୀ ।
- ରମବାଦେବ ମର୍ଯ୍ୟାଦା ଆଜାର ଅତିନର୍ମୁଣ୍ଡ, ବନନାଥଙ୍କ ଏକାନ୍ତର୍ମାଣରେ
- 'କାହୁଁ ଆଶ୍ରମଳାଙ୍କାର୍ଯ୍ୟ' — ବନନାଥ — ଅଲ୍ଲକାର୍ତ୍ତରାଦ
- 'ଶ୍ରୀତିବାତ୍ମା କାହୁଁମ୍ଭ' — ବନନାଥ — ଶ୍ରୀତିବାଦ
- 'ବିଶିଷ୍ଟ ପଦବନା ବୀତି' — ବନନାଥ — ଉଚ୍ଚିତ କାକୁର ବୋର୍ଡ୍ ଅପାର୍ଟ୍ମେଣ୍ଟ୍' —
- 'ଶକ୍ତ ବ୍ୟାଘ୍ରମୁକ୍ତ କାହୁଁମ୍ଭ' — ଶାହିତାମାନୀ — ବିଶବାସ ବିଭାଗ
- 'କାର ଓ ଅଳ୍ପାଯୁ' — ବେନୋଡାର୍ ଫେର
- ବିତି — ଶୁଣ୍ଠିର
ଶାମ — ଇମ୍ର
ଶ୍ରୀକୃତ୍ସ — ରମନ
ଶ୍ରୀନାଥ — ରମନ
କ୍ରମାର୍ଥ — ଶୀର୍ଷ
କ୍ରେଟ୍ — ଅଧ୍ୟାତ୍ମ
ବିଜ୍ଞାପ୍ତି — ପାତ୍ର
ବୁଝୁଦ୍ଧା — ବୀଜ୍ଞାନ
ଶମ — ଶାନ୍ତ
ଶେର → ରମ
- ଆର୍ଟ ଉପରୁ ହାତର ଆଲ୍ଲକାରିଙ୍କ ହେଠାରେ
ନାମ କହାଇଛନ୍ତି ଭୂଷ୍ମିଲୋହର ପରିପତିରେ, ବାମୀଜୁଲିଙ୍କ
ରେ ଅନ୍ତାଗାଁ ।
- କାର ବିର୍ତ୍ତିତ କେମାଲର ଓ ଜେଜ — ବିଲେବ, ଅନ୍ତାରର ଓ
ଅନ୍ତାଗାଁ ।
- କଥା, ଲେଖା, ଅଲ୍ଲକାର୍ତ୍ତ, ଛନ୍ଦ ଦିଇର ରୁ ବନା, ଅନ୍ତର କାକୁର ପୋଣ୍ଡ ହେତୁ ହାତରେ
ଅର୍ଥ ଅନ୍ତାଗାଁ । ଆନନ୍ଦବିନ୍ଦ ଅର୍ଥ ନାମ ରେତ 'ଶ୍ରୀକୃତ୍ସ' ।
- ଲୋଲୋର 'ଅର୍ଦ୍ଦ ବେତ ଭ୍ୟାନ', ବୃଦ୍ଧକଳ ଅଭ୍ୟମଦାରେ ଅନ୍ତରବନାଥକ । ବୀକ୍ରନାଥର
'କାତିକା' — ଶ୍ରୀକୃତ୍ସ ।
- ଭାଙ୍ଗବଳ୍କୁର ଦୁଇ ଶ୍ରୀ — ମେଜେନ୍ହି - କାତାପନୀ ।

- श्रेष्ठ राजेन्द्र → नाथशास्त्र → रामायण अलौकिक वाचन
- गोमती → काशाल्यशरीर → अलौकिकवादी महर्षित
- दक्षी → काशाल्य
- वामन → लाकुल्यशरीर-भूमूलि } वीतिवाद
- आत्मवर्धन → श्रवणालोक एवं दृष्टि.
- अदितिरघुन्ति → श्रवणालोक एवं 'नाम' शब्द
- द्रुतुक → वरदेवाणि लीवितम् → रामायणवादी मृत्यु
- विष्वनाथ → माइत्रजापति
- अगस्त्याश्रम → राम-गुरुर्वाच
- "नामीर मूष्म मूष्म इतेष तो अलौकिकीन इति श्वासो पापना" → लेमह

- ✳ □ 'अलौकिकवाद' - एवं कृष्ण दक्षी अथवा उंच 'काशाल्य', वलन 'पात्र वस्त्र'
- ✳ □ 'वीतिवाद' - दक्षीर 'काशाल्यर्थ' वृत्तिरूप वलन इत्येहे मात्। - मास्तु अथ माइत्रजापति गोमति, मात् २३ - दक्षी, राजीवी, दक्षीर एवं मात् शाब्दो वीतिवादी-भूता कृता
- ✳ □ दक्षीर-मास्तु-पात्र वामन-वीति, ताकौ वरशार्व वृत्तन ' "वीतिगाय्या नाम्य"

- द्रुतुक → काशाल्यर्थभूत्य → अत्रु वामनवे शाखा कृत्वा, तिति जात अकौ भार्या कृत्वा वृत्तन - लापिदा.
- वात्ययधर → काशमीमात्रमा
- ✳ □ अमर्त्य → 'कविकल्पालय' → पूर्विवाद
- ✳ □ वर्जनात्मिकवाद : वै लेमह वर्जनात्मिक उपर्युक्त मास्तु रणोर्वदन, तिति वलन-शकाल्यमहित्यं नाम् ओ पूर्वामा मरुर्व वर्जनात्मि,
- वर्जनात्मि एव चिन्तारूप तत्र पारित वृत्तन द्रुतुक,
- द्रुतुक उपर्युक्त वृत्तन वृत्तन कृत्वा
- ✓ द्रुतुकाई अथवा माइत्रजापति तिति वर्जनवे शदिगा द्वितीय रूप्याङ्गिलन,
- ✳ □ रमवाद : विष्वनाथ → रम अष्टु, मस्तु, अवाशिष, वात्यामिक्याभ्युदयः
- ✳ □ अप्तवायक → अथामादेव भाष्य रमकृ त्वलना कृत्वा,

- * अधिकारियाद → अधिनवर्गुन्तु → शुद्धि- विषयालय → अधिकारियाद-शुद्धु-शुद्धा
- ट्रेनलास्ट 'विमतिकालि' अर्थ 'वास्तव उत्तमालि' वा उत्तम ललाचन्।
(-ट्रेनादु-ट्रेनादक ममक)
- शुद्धक 'विकालिं' अर्थ कृष्णचन - 'अनुग्रहिति'.
(ज्ञान- कारन ममक)
- एनायक वास्तवन 'वृम' शुद्धि-शुद्धा.
(एनाय- एनायक ममक)

1. नार्थगाम्भीर्य → श्रेष्ठ
2. वाग्याद्यर्थ → दृष्टि
3. कार्यालयकार्त → एमर्ज
4. वाग्यालयकार्यव्यवस्थाप्रविधि → वग्नन
5. विव्यालोकन ललाचन → अवातरणर्वन
6. विव्यालोकन ललाचन → अधिनवर्गुन्तु
7. काव्यमीमांसा → वाज्यायाघर
8. मार्गित्यपर्वत → विव्यवाय विविध
9. विव्यवायविविध → एमव्याय
10. कवित्यालयन → ओमन्त्र
11. विव्याक्षित्यविजय → शुद्धक
12. दग्धालय → धनशुद्धि
13. काव्यालयकार्य → वर्मातेव्यु
14. अद्यपर्वत → एनायक
15. विविक्षण → विश्वमत्यु
16. अधिनवर्गेवी → अधिनवर्गुन्तु-
17. काव्यालयामन → एमन्त्र
18. शृंखलाएकार्य → रेखालयर
19. लेखशरिररवत → शुद्धि
20. काव्यालयकार्यमार्यमत्युग्य → शुद्धि
21. अल्युकरक्षम्युद्ग → कवित्यालय-
22. काव्यालयमीमांसा → शुद्धि

- শকাল্প সরিগো কান্দা → লেমন
- কার্বাং আঞ্চল অল্পকান্দা → বামন
- ঐলার্ফিল্ডকান্দা → বামন
- শীতিকান্দা কান্দা → দল্টি
- হৰিনিকান্দা কান্দা → আনন্দবন্দি
- গুনও অল্পকান্দায়তে রাতেই ছাতে → রাত্রেঘব
- বার্সাং ইমানুকুঁ কান্দা → কিন্তার্জ কবিকান্দা
- 'গুনীড়ত বুঁ' → আনন্দবন্দি
- বালোক্রিবাদ → ক্লুক
- ওপিগুবাদ → লেফামন্ড
- শীতিখাদের মূর্বা → দল্টি